## पद ६४

(राग: छक्कड - ताल: केहरवा)

गुण अगुण गणेश सिच्चदानंद। स्मरा श्रीगंग म्हणा श्री गंग। माता भवानी, चिन्माता भवानी। रूप पाहोनि दंग।।धु.।। मी चेतन ही चिन्माया हा। मी आनंद ही सुखकाया। चिन्मार्तांड ही चिच्छाया हा। शिवरूपासी हें रूप अभेद अभंग। स्मरा श्रीगंग।। १।।